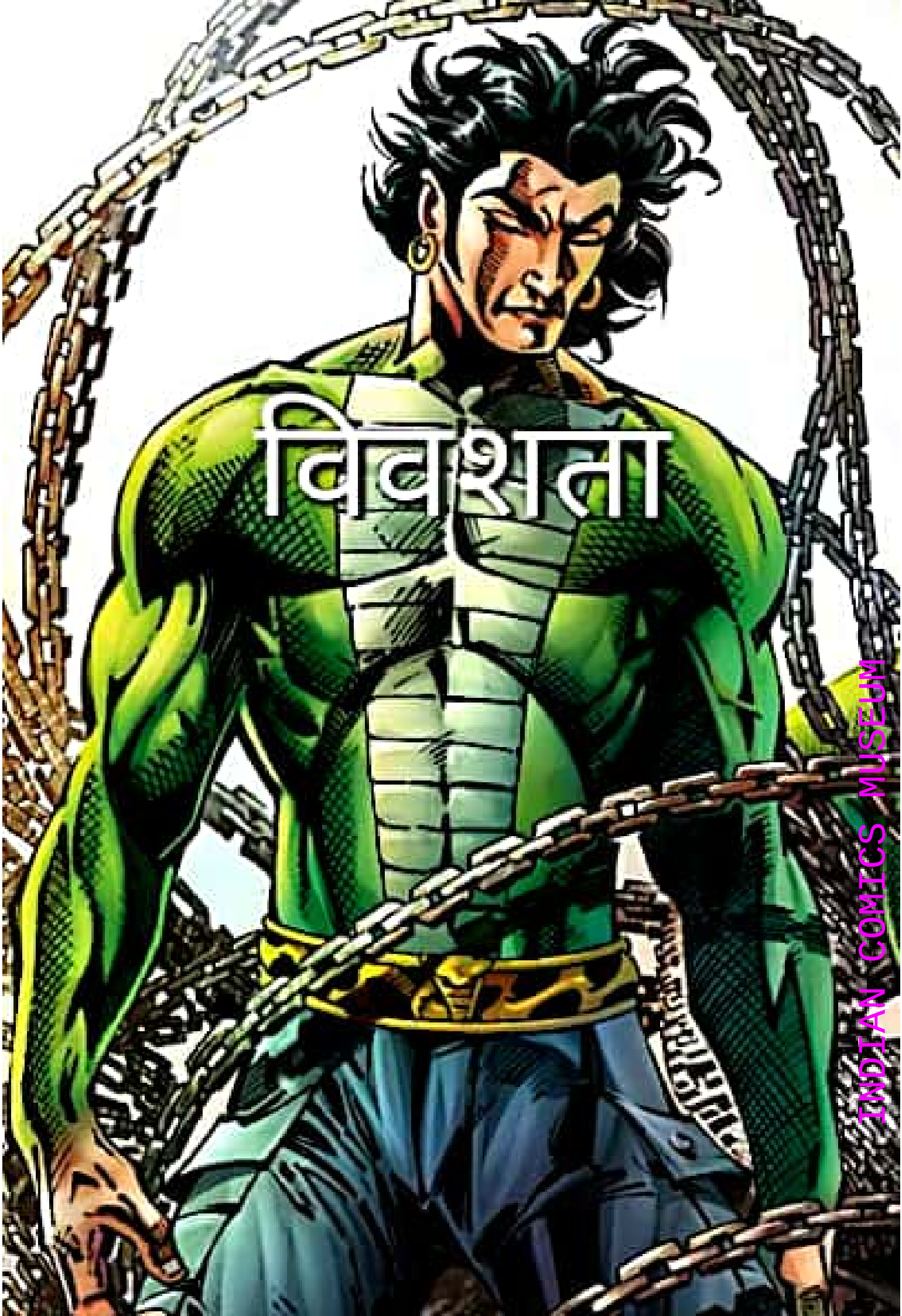

INDIAN COMICS MUSEUM

विवशता

लेखक - रिशव आदर्श कांस्यकार
चित्रांकन - अवलैंग कोकोई

INDIAN COMICS MUSEUM

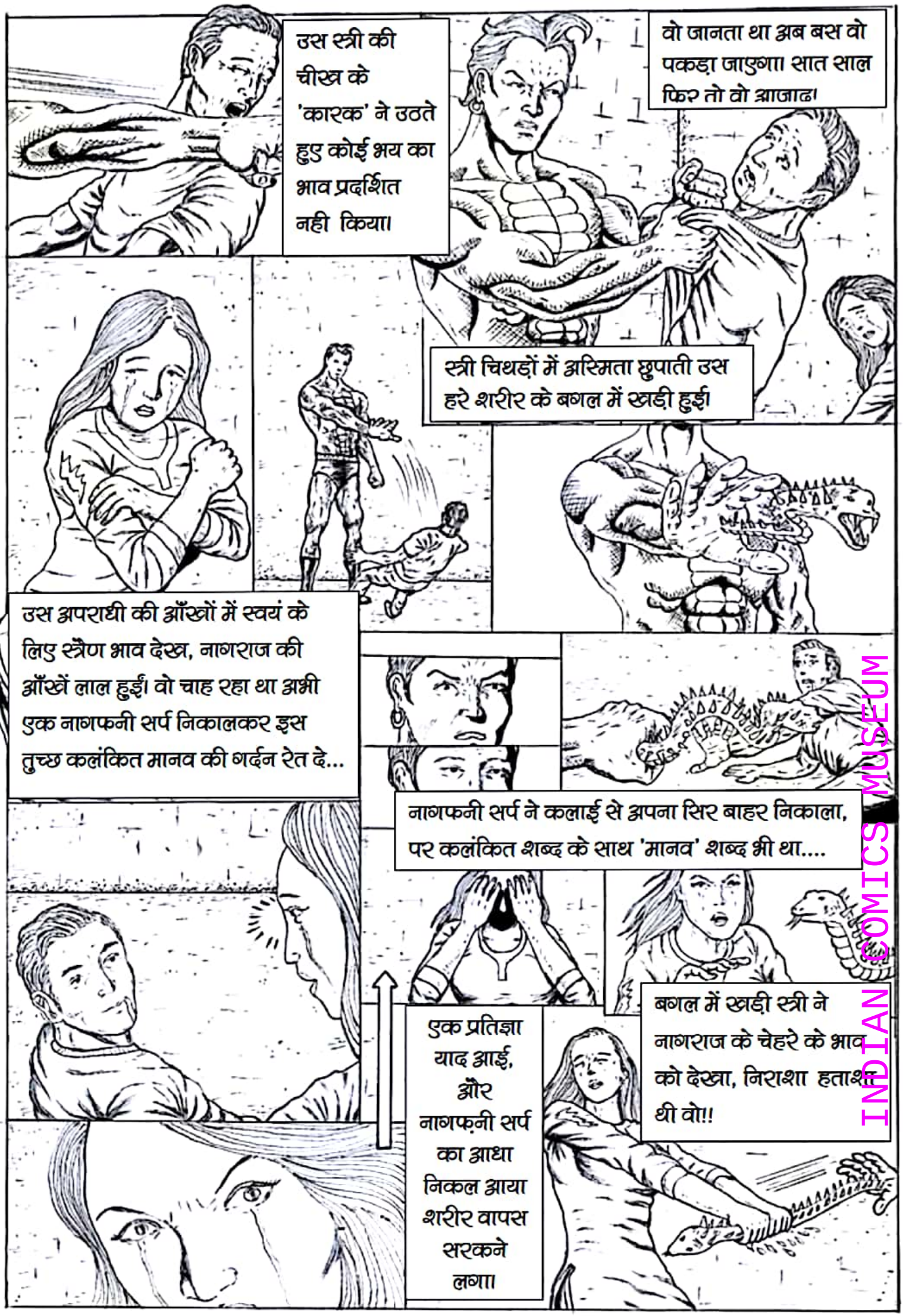
उस स्त्री की चीख के 'कारक' ने उठते हुए कोई भय का भाव प्रदर्शित नही किया।
वो जानता था अब बस वो पकड़ा जाएगा। सात साल फिर तो वो आजाद।
स्त्री चिथड़ों में अस्मिता छुपाती उस हरे शरीर के बगल में खड़ी हुई।
उस अपराधी की आँखों में स्वयं के लिए स्त्रैण भाव देख, नागराज की आँखें लाल हुईं। वो चाह रहा था अभी एक नागफनी सर्प निकालकर इस तुच्छ कलंकित मानव की गर्दन रेत दे...
नागफनी सर्प ने कलाई से अपना सिर बाहर निकाला, पर कलंकित शब्द के साथ 'मानव' शब्द भी था....
एक प्रतिज्ञा याद आई, और नागफ़नी सर्प का आधा निकल आया शरीर वापस सरकने लगा।
बगल में खड़ी स्त्री ने नागराज के चेहरे के भाव को देखा, निराशा हताशा थी वो!!
INDIAN COMICS MUSEUM

उस स्त्री ने अस्मिता का ख्याल छोड़, हाथों से नागफ़नी सर्प के धड़ को पकड़ लिया।

और अपने हमलावर पर चाबुक की भांति वार किया।

हथेलियों में रक्तधारा बनी, पर क्रोधाग्नि और आवेश में उस स्त्री ने पूरा नागफ़नी सर्प खींच निकाला

नागराज हिला, स्त्री फिर चीखी...और एक कटा सिर जमीन पे लुढ़क गया।

नागराज ने उस स्त्री के भावों की टोह लेनी चाही। पर उसे आधार न मिला उसके इस कृत्य को गलत ठहराने का!

बरबस ही नागराज को डोगा याद आ गया...

खून से लथपथ नागफ़नी सर्प वापस अपने मालिक के शरीर पर चढ़ रहा था...गन्तव्य की तलाश में!

INDIAN COMICS MUSEUM